Dr. Priti Ranjan
Assistant professor
H.D Jain College (Ara)

B.A Part – I

Paper – 1

Topic – Uttar Vaidik kal ki rajnitik Vyavastha.

उत्तर वैदिक काल
(1000 - 600 ई० पू०)

1000 ई० पू० से 600 ई० पू० काल तक की अवधि को उत्तर वैदिक काल में रखा गया है। इस काल के अध्ययन हेतु भी दो प्रकार के साक्ष्य उपलब्ध हैं — 1. पुरातात्विक साक्ष्य 2. साहित्यिक साक्ष्य।

पुरातात्विक साक्ष्य में मुख्य चित्रित धूसर मृद्भांड तथा लोहे के उपकरण हैं। लोह उपकरण से संबंधित 4 स्थलों की खुदाई की गई है। अतरंजीखेड़ा, जखेड़ा, हस्तिनापुर एवं नोह। चित्रित धूसर मृद्भांड के अंतर्गत कुल 700 स्थल मिले हैं। अतरंजीखेड़ा में पहली बार कृषि से संबंधित लोह उपकरण मिले हैं। साहित्यिक साक्ष्य के अंतर्गत सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, आरण्यक और कुछ उपनिषद हैं।

राजनीति

1000 ई० पू० में जब लोहे के उपकरण बनने लगे तो गंगा-यमुना के दोआब क्षेत्र को साफ करना आसान हो गया। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आर्यों का सामना ताँबा के ओजार एवं गेरुए रंग के मृद्भांड इस्तेमाल करने वालों से हुआ जबकि पूर्वी उत्तर प्रदेश में उनका सामना ताँबा के ओजार एवं काले व लाल मृद्भांड इस्तेमाल करने वाले लोगों से हुआ। उत्तर वैदिक काल में आर्य के विजय के कारण लोहे के हथियार एवं अश्व-चालित रथ थे।

पंजाब से आर्यजन गंगा-यमुना दोआब होते हुए सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में फैल गए। भरत व पुरु मिलकर कुरु हो गए। आरंभ में उनकी राजधानी 'असन्दीवत' थी।

दिल्ली व दोआब पर अधिकार के बाद यह क्षेत्र कुरुक्षेत्र कहलाने लगा। राजधानी- हस्तिनापुर हो गई। राजा; परीक्षित, जन्मेजय आदि कुरु वंश के राजा हुए। परीक्षित का नाम अथर्ववेद में मिलता है। कुरु वंश का अंतिम शासक निचक्षु था। उसने हस्तिनापुर से राजधानी कौशांबी स्थापित किया। कुरु कुल से ही महाभारत का युद्ध जुड़ा है। 950 ई०पू० में कौरवों और पांडवों के मध्य महाभारत हुआ यद्यपि दोनों कुरु कुल के ही थे।

मध्य दोआब में क्रीवी एवं तुर्वस ने मिलकर पांचाल राज्यवंश की स्थापना की। आधुनिक- बरेली- बदायूँ व फर्रुखाबाद इसके अंतर्गत है। प्रवाहण जाबाली- पांचाल नरेशों में प्रमुख थे जो विद्वानों के संरक्षक थे। पंचाल- दार्शनिक राजाओं के लिए जाना जाता है।

उत्तरवैदिक कालीन सभ्यता का केन्द्र- मध्यदेश था। मध्यदेश सरस्वती और गंगा के दोआब तक फैला था। सरयू नदी के किनारे कोशल राज्य हुआ जो रामकथा से जुड़ा हुआ है। आर्यों का विस्तार- आगे वरणावती नदी के किनारे हुआ, जहाँ काशी राज्य की स्थापना हुई। उसके बाद सदानीरा (गंडक) के किनारे विदेह राज्य की स्थापना हुई। शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है, विदेह माधव ने अपने गुरु राहुलगण की सहायता से अग्नि द्वारा सदानीरा के पार के क्षेत्र का सफाया किया था।

सिन्धु नदी के दोनों तट पर गांधार जनपद था। गांधार और व्यास नदी के बीच केकेय का देश था। मध्य पंजाब में सियाल-कोट और उसके आस-पास मद्र देश था। राजस्थान के भरतपुर, अलवर और भरतपुर में मत्स्य राज्य की स्थापना हुई।

मध्यप्रदेश में कुशीनगर की स्थापना हुई। गंगा-यमुना दोआब एवं उसके नजदीक का देश ब्रह्मर्षि देश कहलाता था। हिमालय एवं विंध्याचल के बीच का भाग मध्यदेश कहलाता था। आर्य सभ्यता के बाहर पुलिंद (दक्षिण) शबर (मध्य प्रांत व उड़ीसा) ब्रात्य (मगध) निषाद आदि निवास करते थे।

राजत्व का सिद्धान्त

उत्तर वैदिक काल में पहली बार क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ। ऋग्वैदिक आर्यों का कबीलाई ढांचा टूट गया। युद्ध क्षेत्रों हेतु होने लगे। व्यवस्थित रूप से राजत्व का सिद्धांत ऐतरेय ब्राह्मण में विकसित हुआ। इसमें कहानी है। मिट्टी पराजय के बाद देवताओं का राजा सोम को बनाया गया और वे युद्ध जीतने लगे। तैतरीय उपनिषद् में कहानी है पराजय के बाद देवताओं ने प्रजापति के समक्ष यज्ञ किया और प्रजापति ने अपने पुत्र इन्द्र को राजा बनाया। अत्याचारी राजा को जनता द्वारा हटाने का भी उल्लेख है।

ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार उत्तर का राजा विराट दक्षिण का राजा भोज, पश्चिम का राजा स्वराट, मध्य देश का राजा राजा और पूरब का राजा सम्राट कहलाता था। एकराट व सार्वभौम चारों दिशाओं को जीतने वाले को कहते थे। वैराज्य बिना राजा वाला क्षेत्र था। अथर्ववेद में राजा को विषमता (जनता का भक्षक) कहा गया है। राज्यपद की प्रतिष्ठा बढ़ी और राज्यपद से संबंधित निम्नलिखित संस्कार प्रचलित हुए -

राज्याभिषेक – यह महत्वपूर्ण संस्कार था। इसका उद्देश्य परम शक्ति प्राप्त करना था। युधिष्ठिर के ही राज्याभिषेक हुए। अभिषेक 17 प्रकार के जलों से होता था। अभिषेक संस्कार के समय रत्नियों की, एक रानी की, एक हाथी की, एक सफेद घोड़े तथा एक सफेद बैल की तथा एक श्वेत छत्र इत्यादि की आवश्यकता होती थी।

राजसूय यज्ञ

इसका वर्णन शतपथ ब्राह्मण में मिलता है। जहाँ राज्याभिषेक आवश्यकता कृत था वहाँ राजसूय एक ऐच्छिक धार्मिक अनुष्ठान था। दो दिन चलता था।

अश्वमेध यज्ञ

इसका उद्देश्य राजा के राज्य का विस्तार करना और लोगों को सुख एवं समृद्धि प्रदान करना था। अंत मे घोड़े की बलि दी जाती थी।

वाजपेय यज्ञ

इसका उद्देश्य राजा को नव-यौवन प्रदान करना व उसकी शारीरिक एवं आत्मिक शक्ति बढ़ाना था। राजा का रथ सबसे आगे निकलता था।

उत्तर वैदिक काल में करारोपण प्रणाली नियमित हो गई थी। ऋग्वेद काल में दिया जाने वाला स्वैच्छिक उपहार था कर 'बलि' अब आवश्यकता रूप से लिया जाने लगा। संभवतः बलि आय का 16वाँ भाग था। बलिहृत वैश्यों हेतु प्रयुक्त शब्द था। कर वैश्य देते थे।